DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO-9415376575

B.A PART-I (HONS.) Paper-II

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No. Lecture No. 17 Date 30/04/2020

सविनय अवज्ञा आंदोलन से आगे

सन 1929 में पं. नेहरू की अध्यक्षता में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित हो गया। इसी वक्त 'नमक कानून' को तोड़ने का कार्य शुरू हुआ। गाँधी और पटेल ने लम्बी-लम्बी यात्राएँ की। लोगों ने उनका स्वागत किया और सारे देश में स्वाधीनता की ललक व्याप्त हो गई। 'मुस्लिम लीग' ने इस आंदोलन में भाग नहीं लिया, किन्तु खाँ अब्दुल गफ्फार खाँ गाँधी के साथ रहे। यह आन्दोलन सन 1931 तक बड़े जोर-शोर से चला। अन्त में लार्ड इरविन के अनुरोध पर गाँधीजी ने गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना स्वीकार कर लिया और सविनय अवज्ञा आन्दोलन समाप्त करने की घोषणा की। गोलमेज सम्मेलन से भी कुछ न हासिल हो सका। सांप्रदायिकता का वातावरण तथा अम्बेडकर का हरिजनों की स्वतंत्र माँगने की जिद इस असफलता के मुख्य कारण थे।

सन 1932 में एक बार फिर सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ, किन्तु अधिक सफलता न मिलने के कारण 1934 में गाँधी ने पूरी तरह से इस आन्दोलन को समाप्त कर दिया। इस असफलता के पीछे हरिजन समस्या की मुख्य भूमिका रही। सांप्रदायिक पंचाट (Communal Award) के विरुद्ध जिसमें हरिजनों को पृथक निर्वाचन का अधिकार दिया गया था। गाँधीजी ने आन्दोलन किया परन्तु तत्पश्चात शान्ति स्थापित हो सके, जब 'पूना समझौता' (Puna Pact) हुआ।

कुछ ही वर्षों बाद द्वितीय महाविश्वयुद्ध की शुरुआत हो गई। गाँधी व्यक्तिगत रूप से इस बार यही चाहते थे कि अंग्रेजों की सहायता की जाय, किन्तु कांग्रेस को यह मंजूर नहीं था। युद्ध के दौरान कई प्रकार से भारत को तिरस्कृत किया गया। 1940 में गाँधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू कर दिया। कई लोगों ने गाँधी का साथ दिया किन्तु बाद में कुछ राजनैतिक कारणों से इस सत्याग्रह को भी बंद कर दिया गया।

PTO

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545

B.A PART-I (HONS.) Paper- II

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................. **Date.** 30/04/2020

सन 1942 में भारत की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए 'क्रिप्स मिशन' भारत आया। 'क्रिप्स मिशन' की सभी बातें भारत को अमान्य थीं। इसलिए उसके तुरन्त बाद 'भारत छोड़ो' आंदोलन की शुरुआत कर दी गई। यह आंदोलन 'करो या मरो' के सिद्धान्त पर चलाया गया। 1942 में अंग्रेजों के विरुद्ध तोड़-फोड़ की कार्यवाहियाँ शुरू हो गई। अब अंग्रेज समझने लगे कि शायद इस आंदोलन को दबाना मुश्किल होगा।

यह आन्दोलन 1946 तक चलता ही रहा। अन्त में 15 अगस्त 1947 को भारत को एक स्वतंत्र देश घोषित किया गया।

उपर्युक्त बातों के आधार पर हम कह सकते हैं कि महात्मा गाँधी के स्वतंत्रता आन्दोलन का यह अत्यंत संक्षिप्त इतिहास है। इसकी चर्चा इसलिए कर दी गई कि गाँधी के राजनैतिक विचारों को समझने में अधिकांश सहायता प्राप्त होगी।

Continue till next date.

Scanned with CamScanner